अध्याय-5

कर्मसंन्यासयोग-नामक पाँचवा अ0।।

[1-6 सांख्ययोग और कर्मयोग का निर्णय]

अर्जुन उवाच-सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण पुनः योगं च शंससि। यत् श्रेयः एतयोः एकं तत् मे ब्रूहि सुनिश्चितं।। 5/1

कृष्ण कर्मणां संन्यासं च पुनः	हे आकर्षणमूर्त! कर्मों के {समुचित या} सम्पूर्ण त्याग {रूप} संन्यास की और फिर {कभी}
योगं शंससि एतयोः यत् श्रेयः	{कर्म करते हुए} कर्मयोग की प्रशंसा करते हो। इन दोनों में से जो {अधिक} श्रेष्ठ हो,
तत् एकं सुनिश्चितं मे ब्रूहि	उस एक को भली-भाँति निश्चित कर मुझे बताइए, {जिससे सुमार्गगामी बनूँ।}

श्रीभगवानुवाच-सन्न्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरौ उभौ। तयोः तु कर्मसन्न्यासात् कर्मयोगो विशिष्यते।। 5/2

संन्यासः च कर्मयोगः उभौ	समुचित कर्मत्याग और कर्म के साथ योग, {ये साधु-संन्यासी या गृहस्थी} दोनों प्रति
निःश्रेयसकरौ तु तयोः कर्म-	परमकल्याणकारी हैं; किन्तु उन दोनों में {सहज-2 होने की दृष्टि से} कर्म {के समुचित}
संन्यासात् कर्मयोगः विशिष्यते	त्याग से कर्म करते-2 याद {धंधाधोरी वाले गृहस्थियों के लिए} विशेष अच्छी है।

ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति। निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात् प्रमुच्यते।।5/3

महाबाहो यः न द्वेष्टि	हे महान {अष्टदेवों की सहयोगी रूप} भुजाओं वाले! जो न {प्राणीमात्र से} द्वेष करता है,
न कांक्षति स नित्यसंन्यासी	न {कोई सांसारिक} इच्छा करता है, वह {गी. 6-4 में कर्मों का} सदा त्यागी संन्यासयोगी
ज्ञेयः हि निर्द्वन्द्वः बन्धात्सुखं प्रमुच्यते	जाना जाता है; क्योंकि द्वन्द्वरहित कर्मबंधन से सुखपूर्वक पूरा ही छूट जाता है।

साङ्ख्ययोगौ पृथक् बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः। एकं अपि आस्थितः सम्यक् उभयोः विन्दते फलं।।5/4

सांख्ययोगौ पृथक् बालाः	•सांख्य {सम्पूर्ण व्याख्या सहित केवल ज्ञान} और कर्मयोग- ये दोनों अलग हैं, {ऐसे} बालबुद्धि
प्रवदन्ति पण्डिताः न एकं अपि	कहते हैं; विद्वान लोग नहीं {कहते। सांख्य & कर्म करते हुए भी योग, दोनों से} एक में भी
सम्यक् आस्थितः उभयोः फलं विन्दते	भली प्रकार स्थित हुआ {कपिलमुनि समान सांख्य•&योग} दोनों का फल पाता है।

•कपलरूप जोड़ी कपिल द्वारा बसाई प्राचीनतम कांपिल्यनगर वासी कपिलमुनि का मनन-चिन्तन ही 'सांख्य' है।

यत् साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तत् योगैः अपि गम्यते। एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।। 5/5

सांख्यैः यत् स्थानं प्राप्यते च तत्	सांख्य द्वारा जो पद मिलता है और वही {ल.ना. पद, कर्म करते एक बाबा की याद में}
योगैः अपि गम्यते सांख्यं च	कर्म {सहित} योग द्वारा भी {परमश्रेष्ठ विष्णु का पद} प्राप्त होता है। {अतः} सांख्य और
योगं यः एकं पश्यति स पश्यति	कर्मयोग को जो {गीता संविधान-अनुसार} एक देखता है, वह {सत्य} देखता है।

सन्न्यासः तु महाबाहो दुःखं आप्तुं अयोगतः। योगयुक्तो मुनिः ब्रह्म नचिरेण अधिगच्छति।। 5/6

महाबाहो सन्न्यासः तु अयोगतः	हे अष्टमूर्ति वाले महाबाहु! संन्यास तो कर्मयोग {में गृहस्थ के अनुभव} बिना
दुःखं आप्तुं योगयुक्तो मुनिः	दुःखपूर्वक प्राप्त होता है। योगयुक्त मननशील व्यक्ति {सांख्ययोग प्रणेता कपिलमुनि की भाँति}
ब्रह्म नचिरेण अधिगच्छति	परंब्रह्म को शीघ्र ही पाता है। {वही राजा जन+क ने तो एक सेकिंड में जीवन्मुक्ति पाई थी।}

[7-12 सांख्ययोगी और कर्मयोगी के लक्षण और उनकी महिमा]

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः। सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन् अपि न लिप्यते।। 5/7

योगयुक्तः विशुद्धात्मा विजितात्मा	योगयुक्त {चित्त से} विशेष शुद्ध, {चंचल मन पर बुद्धि द्वारा} विजयी आत्मा,
जितेन्द्रियः सर्वभूतात्मभूतात्मा	जितेन्द्रिय {और हिंसक-अहिंसक/अच्छे-बुरे} सब प्राणियों में आत्मभाव वाला {व्यक्ति}

कुर्वन् अपि न लिप्यते	{कोई कर्म} करता हुआ भी {उस अच्छे-बुरे कर्म में} न आसक्त होता {न बंधनग्रस्त}।

न एव किञ्चित् करोमि इति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्। पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वसन्।। 5/8

प्रलपन् विसृजन् गृह्णन् उन्मिषन् निमिषन् अपि। इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्।।5/9

युक्तः तत्त्ववित् इन्द्रियाणि	{शिवबाबा की} यादमग्न, {तेईसों} तत्त्वों का जानकार, {प्रकृतिकृत कर्म & कर्णादि ज्ञान} -इन्द्रियाँ,
इन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन्	इन्द्रियों के {स्वाभाविक} भोगों में लगी हुई हैं- ऐसा {निश्चय} धारण करते हुए,
पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन्	देखते, सुनते, छूते, सूँघते, खाते, जाते,
स्वपन् श्वसन् प्रलपन् विसृजन्	सोते, श्वाँस लेते, बोलते, {मल-मूत्र} त्यागते,
गृह्णन् उन्मिषन् निमिषन् अपि	{कुछ} लेते हुए, आँखें खोलते {और} बन्द करते भी,
किंचित् एव न करोमि इति मन्येत	कुछ भी नहीं करता, ऐसे मानता है। {ऐसा आत्मज्योति में स्थिर योगी अकर्ता है।}

ब्रह्मणि आधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः। लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रं इव अम्भसा।। 5/10

यः ब्रह्मण्याधाय संगं त्यक्त्वा कर्माणि करोति	जो {एकमात्र} परंब्रह्म-आश्रयी आसक्ति त्यागकर कर्म करता है,
स अम्भसा पद्मपत्रं इव पापेन लिप्यते न	वह {मलिन} पानी से कमल-पत्र की तरह पाप से लिप्त नहीं होता।

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैः इन्द्रियैः अपि। योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वा आत्मशुद्धये।। 5/11

योगिनः कायेन मनसा बुद्ध्या	योगीजन तन-मन {धन} से, बुद्धि द्वारा {और प्रकृति द्वारा समय-सम्बन्ध-संपर्क से}
केवलैः इन्द्रियैरपि आत्मशुद्धये	{प्राप्त} केवल इन्द्रियों द्वारा भी, आत्मा की {कामक्रोधादिक पञ्चविकारों से} शुद्धि हेतु
सङ्गं त्यक्त्वा कर्म कुर्वन्ति	{मनसा} आसक्ति को त्यागकर {अणुरूप आत्मज्योतिबिन्दु की स्मृति में} कर्म करते हैं।

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिं आप्नोति नैष्ठिकीं। अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते।। 5/12

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा नैष्ठिकीं	योगी {पु. संगमी शूटिंग में अनादिनिश्चित} कर्मों के फल को त्यागकर निश्चल {हुआ}
शांतिम आप्नोति अयुक्तः काम-	शांति को पाता है; {परंतु} अयोगी=भोगी {आसक्ति भरी सदा अपूर्तनीय} कामनाओं के
कारेण फले सक्तः निबध्यते	कारण फल में आसक्त हो {भली-भाँति दैहिक इन्द्रियों के बंधन में} बँध जाता है।

[13-26 ज्ञानयोग का विषय]

सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्य आस्ते सुखं वशी। नवद्वारे पुरे देही न एव कुर्वन् न कारयन्।। 5/13

वशी देही मनसा सर्वकर्माणि	{इन्द्रियों का} वशकर्ता आत्मा {भ्रूमध्य स्टार में स्थित हो,} मन से सब कर्मों को
संन्यस्य नवद्वारे पुरे न कुर्वन्	सम्पूर्ण त्यागकर, नौ द्वार वाले नगर {रूपी शरीर} में {मानों कुछ} न करता हुआ
न कारयन् सुखं एव आस्ते	{और} न {मन सहित ज्ञान या कर्मेन्द्रियों द्वारा} कराता हुआ सुखपूर्वक ही रहता है।

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः। न कर्मफलसंयोगं स्वभावः तु प्रवर्तते।। 5/14

प्रभुः लोकस्य न कर्तृत्वं	{अर्जुन-देह में अनासक्त अकर्ता} प्रभु {शिवज्योति भी} न सांसारिक कर्तापने {के अहंकार} का,
न कर्माणि न कर्मफलसंयोगं	न कर्मों का {और निरंतर अखूट ज्ञानभंडार की स्थिरता से} न कर्मफल-संयोग का
सृजति तु स्वभावः प्रवर्तते	सर्जक है; किंतु {पु.संगमयुगी शूटिंग• में भी भोग वादी प्राणी} -स्वभाव प्रवर्तित होता है।

•{देखिए गीता 4-13 में पु.संगमयुग में ही कल्प-2 की शूटिंग का प्रमाण→ "चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।"}

न आदत्ते कस्यचित् पापं न च एव सुकृतं विभुः। अज्ञानेन आवृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।। 5/15

विभुः कस्यचिन्न पापं च न	विशिष्ट जन्मा {हल्का-फुल्का, सूक्ष्मतम, प्रवेशनीय & अनासक्त} प्रभु किसी के न पाप को और न

सुकृतं एव आदत्ते अज्ञानेन	{हल्के-भारी} पुण्य को ही लेता है। {आद्यशंकराचार्य द्वारा वितत सर्वव्यापी के} अज्ञान से
ज्ञानं आवृतं तेन जन्तवः मुह्यन्ति	ज्ञान ढका है, उससे {पैदा हुए कलियुगी मोहान्धकार में} प्राणी मोहित हैं;

ज्ञानेन तु तत् अज्ञानं येषां नाशितं आत्मनः। तेषां आदित्यवत् ज्ञानं प्रकाशयति तत्परं।। 5/16

तु ज्ञानेन येषां आत्मनः	किंतु {एकमात्र श्वेतवाहन अर्जुन-रथ में मुकर्रर रूप से एक व्यापी के} ज्ञान द्वारा जिनका आत्मा
तदज्ञानं नाशितं तेषां तत् ज्ञानं	{सो परमात्मा} का वह अज्ञान नष्ट हो गया, उनका वह {अव्यभिचारी गीता-} ज्ञान
परं आदित्यवत् प्रकाशयति	परम {पिता सदाशिव ज्योति} को {अखूट ज्ञानप्रकाश के भंडारी चेतन} सूर्य-जैसा दिखाता है।

तद्बुद्धयः तदात्मानः तन्निष्ठाः तत्परायणाः। गच्छन्ति अपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः।। 5/17

तद्बुद्धयः तदात्मानः तन्निष्ठाः	उसमें बुद्धियुक्त, उस {स्वरूप ही} में आत्मवान, उसमें आत्म निष्ठावान,
तत्परायणाः ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः	उसमें परमाधारित ज्ञान से {अव्यभिचारी योग द्वारा पूर्णतः} धुले पापों वाले
अपुनरावृत्तिं गच्छन्ति	{लोग यहाँ} पुनः वापस नहीं आते; {युधिष्ठिर जैसे सदेह सुखधाम जाते हैं।}

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि च एव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।। 5/18

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि	विद्या और विनयशील ब्राह्मण में,{सीधे स्वभाव की भारतीय मानवीय} गाय में,
हस्तिनि च शुनि च श्वपाके	हाथी {जैसे देहंकारी में} & कुत्ते {जैसे महाकामी} में या कुत्ते को पकाने वाले
पण्डिताः एव समदर्शिनः	{अतिक्रोधी चंडाल} में पण्डितजन ही {आत्मभाव से साक्षी हो} समदर्शी होते हैं।

इह एव तैः जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः। निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्मात् ब्रह्मणि ते स्थिताः।। 5/19

येषां मनः साम्ये स्थितं तैः इहैव	जिनका मन समानता में स्थित है, उन्होंने यहाँ {दुःखधाम में} ही {सारे हिंसक}

सर्गः जितः हि ब्रह्म निर्दोषं	संसार को {गीताज्ञान & राजयोग से} जीता है; क्योंकि परंब्रह्म निर्दोष {और}
समं तस्मात् ते ब्रह्मणि स्थिताः	समान है। अतः वे {आत्मस्थ सहजराजयोगी सो सहयोगी} परंब्रह्म में {ही} स्थिर हैं।

न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य न उद्विजेत् प्राप्य च अप्रियं। स्थिरबुद्धिः असम्मूढो ब्रह्मवित् ब्रह्मणि स्थितः।। 5/20

प्रियं प्राप्य प्रहृष्येत् न	{जिसमें लगाव हो उस} प्रिय {वस्तु या व्यक्ति} को पाकर अति हर्षित नहीं होना चाहिए
चाप्रियं प्राप्य उद्विजेन्न	और {स्नेहशून्य या द्वेषभरे} अप्रिय को पाकर {भी} दुःखी {या हताश} नहीं होना चाहिए।
असम्मूढः स्थिरबुद्धिः	{एकमात्र सदा अनासक्त शिवबाबा सहित सभी व्यक्ति या वस्तु में} संशयहीन {और} स्थिरबुद्धि
ब्रह्मवित् ब्रह्मणि स्थितः	परम्ब्रह्म-ज्ञाता {ब्रह्मावत्स तुरीया} •ब्रह्मतत्व {की उच्चतम और दीर्घतम स्थिति} में {ही} स्थिर है।

•गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः । गुरुः साक्षात् {ऊर्ध्वमुखी} परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

बाह्यस्पर्शेषु असक्तात्मा विन्दति आत्मनि यत् सुखं। स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखं अक्षयं अश्नुते।। 5/21

बाह्यस्पर्शेषु असक्तात्मा आत्मनि	बाहरी विषय-भोगों में अनासक्त पुरुष {भ्रूमध्य में टिकी हुई ज्योतिबिंदु} आत्मा में
यत् सुखं विन्दति स ब्रह्मयोग-	जो {मन का} सुख पाता है, वह परम्ब्रह्म से {सर्वसंबंधों की प्रैक्टिकल सतत भासना से}
युक्तात्मा अक्षयं सुखं अश्नुते	योगयुक्त हुआ {इसी जीवन में} अखूट {विष्णुलोकीय वैकुण्ठ का अतीन्द्रिय} सुख भोगता है।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते। आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः।। 5/22

ये संस्पर्शजाः भोगा ते हि दुःखयोनयः	जो सभी कर्म-इन्द्रियों के विषयों से उत्पन्न भोग हैं, वे ही दुखों के जन्मदाता,
आद्यन्तवन्तः एव कौन्तेय	आदि-अंत वाले {क्षणभंगुर} ही हैं। हे {देहभानहारिणी संगमरमरी दृढ़ भावना वाली} कुन्ती के पुत्र!
बुधः तेषु न रमते	{बुद्धिमानों की बुद्धि शिव से लगे} बुद्धिमान लोग उन {भ्रष्ट कर्म इन्द्रियों के विषयों} में रमण नहीं करते।

शक्नोति इह एव यः सोढुं प्राक् शरीरविमोक्षणात्। कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः।। 5/23

इह एव यः शरीरविमोक्षणात्	इस {लोक} में ही जो {पुरुष परमात्म-स्मृति द्वारा नाशवान} शरीर छूटने से
प्राक् कामक्रोधोद्भवं वेगं सोढुं	पहले काम-क्रोध आदि विकारों से उत्पन्न हुए आवेग को सहने में {या उद्वेगहीन रहने में}
शक्नोति स नरः युक्तः स सुखी	समर्थ है, वह मनुष्य {सहजराज} योगी है, वही सुखी है; {नहीं तो भोगी & दुःखी है।}

यः अन्तःसुखः अन्तरारामः तथा अन्तर्ज्योतिः एव यः। स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतः अधिगच्छति।। 5/24

यः अन्तःसुखः अन्तरारामः	जो {मन बुद्धि से} अन्दरूनी सुखमय है, अन्तर में {प्रशांत महासागर-जैसा शांत&} आनन्दित है,
तथैव यः अन्तर्ज्योतिः ब्रह्मभूतः	वैसे ही जो आत्मज्योति बिंदु में {स्थिर नं. वार पुरुषार्थ अनुसार} ब्रह्मलोक में स्थित हुआ
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं अधिगच्छति	वह योगी परम्ब्रह्म का {यहाँ ही वाणी रहित अन्तर्मौनी} निर्वाणपद पाता है।

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणं ऋषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।। 5/25

क्षीणकल्मषाः छिन्नद्वैधाः यतात्मानः सर्वभूत	{सर्व} पापनाशक, द्विविधारहित, मन-बुद्धि के वशकर्ता, सर्व प्राणीमात्र के
हितेरताः ऋषयः ब्रह्मनिर्वाणं लभन्ते	कल्याण में {परमपिता समान} लगे ऋषि परंब्रह्म का निर्वाण पद पाते हैं।

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसां। अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनां।। 5/26

कामक्रोधवियुक्तानां यतचेतसां	{लोभ-मोह, अहंकार सहित} काम-क्रोध से रहित, संयमित मन-बुद्धि वाले {लोगों का},
विदितात्मनां यतीनां	{व उत्तमांगी अकालतख्त/भ्रूमध्य में एकाग्र हुई} आत्मज्योति बिंदु के जानकार यतियों का
ब्रह्मनिर्वाणं अभितः वर्तते	परंब्रह्मनिर्वाण पद यहाँ {पुरुषोत्तम संगम में} & वहाँ {•विष्णुलोकीय स्वर्ग में} भी होता है।

•{सतत्रेतायुगी 16 या 14 कला स्वर्ग में ज्ञानेन्द्रियों का सुख और विष्णुलोकीय वैकुण्ठ में अतीन्द्रिय सुख होता है।}

[27-29 भक्तिसहित ध्यानयोग का वर्णन]

स्पर्शान् कृत्वा बहिः बाह्यान् चक्षुः च एव अन्तरे भ्रुवोः। प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ।। 5/27

यतेन्द्रियमनोबुद्धिः मुनिः मोक्षपरायणः। विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः।।5/28

बाह्यान् स्पर्शान् बहिः एव कृत्वा च चक्षुः	बाहर के इन्द्रिय-भोगों को {चित्त से} बाहर ही करके और आत्मबिंदु नेत्र को
भ्रुवोः अन्तरे नासाभ्यन्तरचारिणौ	भृकुटि में,{सूंघासांघी या श्वास-प्रश्वास की वृत्ति से} नासिका के अंदर-भीतर संचारित
प्राणापानौ समौ कृत्वा	{मन में चलने वाले शुद्ध-अशुद्ध संकल्प रूप} प्राण-अपान वायु को समानता में रखकर,
यतेन्द्रियमनोबुद्धिः मोक्षपरायणः	वशीभूत इन्द्रियों की मन-बुद्धि वाला,{दुःखों की दुनियाँ से दूर} मुक्ति के आश्रित हुआ← {ऐसा}
विगतेच्छाभयक्रोधः यः मुनिः सः सदा मुक्त एव	इच्छा, भय व क्रोधहीन जो मननशील मुनि है, वह सदामुक्त ही है।

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरं। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिं ऋच्छति।। 5/29

यज्ञतपसां भोक्तारं सर्वभूतानां	यज्ञ-{सेवाओं और आत्मस्मृति की} तपस्या के {आत्मसुख} भोक्ता को, सब प्राणियों में
सुहृदं मां सर्वलोकमहेश्वरं	{विश्व} मित्ररूप मुझ {समान बने जगत्पिता को,सुख-दुख-शांति रूप} •त्रिलोकीनाथ को
ज्ञात्वा शांतिं ऋच्छति	जानकर शांति को पाता है। {अमूर्त शिव तो सिर्फ अण्डे मिसल ब्रह्मांड का मालिक है।}

•{एकमात्र मूर्तिमान साकारी शंकर महादेव/जगत्पिता का ही नाम शिव सुप्रीम सोल के साथ जोड़ा जाता है। और किसी देवता, राक्षस, मनुष्य, प्राणी आदि का नाम सदा पर्दे के पीछे अदृश्य पार्टधारी M. डाइरैक्टर शिव निराकार के बाद और साथ नहीं जोड़ा जाता। इसलिए मूर्तिमान शंकर साकारी होने से सुख-दुख-शांतिधाम तीनों का त्रिलोकीनाथ है।}

अभ्यास प्रश्न-अध्याय 5

(I)निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें-

1) सम्पूर्ण कर्मत्याग और कर्म के साथ योग दोनों में से गृहस्थियों के लिए कौन-सा विशेष अच्छा है?

2) कर्मों का सदा त्यागी संन्यासयोगी कौन बनता है?

3) सांख्ययोग किसको कहते हैं ? संधि विच्छेद सहित अर्थ बताइये।

4) सांख्ययोग और कर्मयोग दोनों को एक देखने वाला सही देखता है या अलग-2 देखने वाला सही देखता है?

5) ज्ञान द्वारा जो पद मिलता है, वही पद कर्मयोग द्वारा प्राप्त हो सकता है या नहीं?/ज्ञान द्वारा जो पद मिलता है वो कर्मयोग द्वारा मिले पद से ऊँचा होता है या नीचा?

6) किस प्रकार का पुरूषार्थी परमब्रह्म को शीघ्र पाता है?

7) किस प्रकार का पुरूषार्थी अच्छे-बुरे कर्म में आसक्त नहीं होता है?

8) किस प्रकार कर्म करने से व्यक्ति पाप से लिप्त नहीं होता?

9) आत्मा के पॉच विकारों से शुद्धि हेतु योगीजन क्या करते हैं?

10) योगी और अयोगी में क्या अंतर है?

11) इन्द्रियों के वशकर्ता का पुरूषार्थ किस प्रकार का होता है?

12) अज्ञानेन ज्ञानं आवृतं-इस वाक्य को क्लेरिफाई कीजिये।

13) कौन-सा ज्ञान परमपिता शिव को अखूट ज्ञानप्रकाश का भंडारी सूर्य जैसा दिखाता है?

14) युधिष्ठिर के समान देह सहित सुखधाम में कौन जाते हैं?

15) पण्डितजन किन-2 प्रकार की आत्माओं में समदर्शी होते हैं?

16) सारे संसार को राजयोगबल से जीतने वालों की क्या विशेषता बताई है ?

17) अखूट अतीन्द्रिय सुख कौन भोगता है?

18) दुखों का जन्मदाता कौन है?

19) इन्द्रियो के विषयों से उत्पन्न भोग सदाकाल स्थाई हैं या क्षणभंगुर हैं। इनमें से सही क्या है?

20) इस संसार में भोगी और दुखी मनुष्य किसको कहेंगे ?

21) निर्वाण पद कौन प्राप्त करता है?

22) ज्ञानेन्द्रियों का सुख और अतीन्द्रिय सुख क्या होता है? इसके बारे मे बताइये।

23) सदामुक्त मुनि की विशेषतायें बताइये।

24)भगवान पक्षपात नहीं करता किस श्लोक से सिद्ध करेंगे?

25) परमधाम में नं.वार कौन बैठ पायेंगे?

26) भोगी किस चीज के कारण कर्म के फल में आसक्त होता है?

27) बुद्धिमानों की विशेषता क्या है?

28) कमल फूल के समान न्यारा-प्यारा कैसे सिद्ध होता है?

29) कर्मातीत अवस्था के लिए कौन-सा श्लोक लागू होता है?

30) तुम बच्चे परमधाम को इस सृष्टि पर उतार लेंगे, कौन-से श्लोक से सिद्ध होता है?

(II) निम्नलिखित रिक्त स्थान की पूर्ति करें-

1) योगी कर्मों के फल को ..... निश्चल शांति को पाता है;

2) अनासक्त व्यक्ति कमल-पत्र की तरह ..... लिप्त नहीं होता।

4) पण्डितजन ही {आत्मभाव से साक्षी हो} .....होते हैं।

5) जो न {प्राणीमात्र से} .....करता है, न {कोई सांसारिक} ..... करता है, वह सदा त्यागी..... जाना जाता है।

(III) निम्नलिखित महावाक्यों को श्लोक के आधार पर समझायें-

1) कर्म करते याद में रहने वाले सदा न्यारे और प्यारे होंगे, हल्के होंगे, किसी भी कर्म में बोझ अनुभव नहीं करेंगे। कर्मयोगी को ही दूसरे शब्दों में कमल पुष्प कहा जाता है। (अ.वा. 14.10.81 पृ.61 मध्य)

2) क्रोध वाले शांति में, योग में रह न सकेंगे। (मु. 1.3.73 पृ.1 मध्य)

3) बाप कहते हैं- याद से पाप कटेंगे और तुम स्वर्ग में चले जावेंगे। (मु. 29.11.70 पृ.2 मध्यांत)

4) योगी जीवन अर्थात निरन्तर के योगी। जो निरन्तर योगी होंगे, उनको खाते-पीते, चलते-फिरते बाप और मैं श्रेष्ठ आत्मा यही स्मृति रहेगी, जैसे बाप वैसा बच्चा। जो बाप के गुण, जो बाप का कार्य वह बच्चों का, इसको कहा जाता है - योगी जीवन। (अ.वा.ता.27.12.83 पृ.79 अंत)

5) बाप कहते हैं- तुम जितना याद में रहेंगे उतना ही कर्म-इन्द्रियाँ बस में हो जावेगी। इसको ही कहा जाता है कर्मातीत अवस्था। (मु. 15.6.68 पृ.1 मध्य)

(IV)-गीता के 5 वें अध्याय का नाम ज्ञान कर्म संन्यासयोग क्यों है और संन्यासियों को कैसे समझायेंगे कि भगवान के द्वारा बताया कर्मयोग, हठयोग से श्रेष्ठ है (श्लोकों के अर्थ बाबा की व्याख्या के आधार पर अपने शब्दों में सार में बताये)